नवम अध्याय
रूपक साहित्य

संस्कृत साहित्य की विविध विधाओं में रूपक या नाट्य अन्यतम है। जितनी विशिष्टताएँ रूपक में होती हैं उतनी अन्य काव्यभेदों में नहीं होती। इसमें गद्य-पद्य दोनों का मिश्रण तो रहता ही है साथ ही इसे रंगमंच पर अभिनीत भी किया जाता है। इसका उद्देश्य उपदेश देना, संवादों के द्वारा घटना का निरूपण करना तथा अभिनय के विभिन्न प्रकारों से दर्शकों का मनोरंजन करना है। काव्य की समस्त विधाओं में नाट्यरचना करना सर्वाधिक कठिन कहा गया है- *नाटकान्तं कवित्वम्*। साथ ही समस्त काव्यों में नाट्यरचना को सर्वाधिक रमणीय कहा गया है- काव्येषु नाटकं रम्यम्।यह संस्कृत काव्य के दो भेदों - दृश्य एवं श्रव्य - में से दृश्य के अन्तर्गत आता है। दृश्यकाव्य के दो भेद होते हैं-रूपक तथा उपरूपक। रूपक दस प्रकार के होते हैं- नाटक, प्रकरण, भाण, प्रहसन, डिम, व्यायोग, समवकार, वीथी, अङ्क तथा ईहामृग। नाटक रूपक का मुख्य भेद है, इसलिए जनसामान्य प्रायः रूपक और नाटक का प्रयोग समान अर्थ में करते हैं।

संस्कृत रूपकों की कुछ विशिष्टताएँ संक्षिप्त रूप में इस प्रकार हैं-

1. संस्कृत रूपकों में कथावस्तु, नेता तथा रस- तीन प्रमुख तत्व माने गए हैं। ये तीनों परस्पर संश्लिष्ट तथा अन्योन्याश्रित हैं।
2. इनका उद्देश्य सहृदय दर्शकों को आनन्द प्रदान करना है।

3. संस्कृत में दुःखान्त रूपकों का अभाव है।
4. इनका कथानक प्रख्यात एवं काल्पनिक–दोनों हो सकता है।
5. इनके पात्र मर्त्य, अर्धमर्त्य , दिव्य – सभी हो सकते हैं।
6. युद्ध, वध, भोजन, स्नान आदि दृश्य रूपकों में वर्जित हैं।
7. संस्कृत रूपकों में विभिन्न प्रकार के पात्र भिन्न–भिन्न भाषा का प्रयोग करते हैं।
8. इनका आरम्भ आशीर्वचन से युक्त मंगलाचरण (नान्दी) से तथा अन्त शुभकामना रूपी "भरतवाक्य" से होता है।

संस्कृत रूपकों के उद्भव के विषय में अनेक मत प्रचलित हैं। मैक्समूलर, सिल्वाँ लेवी आदि यूरोपीय विद्वानों के अनुसार इसकी उत्पत्ति ऋग्वेद के संवाद–सूक्तों (विश्वामित्र नदी संवाद यम–यमी– संवाद, पुरूरवा–उर्वशी–संवाद, सरमा – पणि–संवाद इत्यादि) से हुई है। जर्मन विद्वान् वेबर, विन्दिश आदि इसकी उत्पत्ति यूनानी रूपकों से मानते हैं। कुछ विद्वान् पुत्तलिका नृत्य, मेपोल नृत्य तो कुछ विद्वान् छाया–चित्रों के प्रदर्शन से इसकी उत्पत्ति को स्वीकार करते हैं। वैसे नाट्य से सम्बन्धित प्राचीनतम ग्रन्थ, भरत–रचित, *नाट्यशास्त्र* (100 ई0 पू0 से 300 ई0 के मध्य) के अनुसार देवताओं की प्रार्थना पर ब्रह्मा ने चारों वेदों से सार भाग एकत्र कर नाट्यवेद के रूप में पंचमवेद की रचना की जो देवताओं के मनोरंजनार्थ था। इस प्रकार भरत मुनि के अनुसार ब्रह्मा ही रूपक के प्रथम रचयिता हुए।

सर्वप्रथम *"त्रिपुरदाह"* तथा *"समुद्रमन्थन"* नामक रूपकों का अभिनय किया गया। नाट्यशास्त्र में रूपक के नियम निर्धारित किए गए जो कथानक, पात्र, रस, रंगमंच–व्यवस्था , नृत्य, गीत तथा भाषा आदि से सम्बन्धित हैं। इसके अनुसार संस्कृत रूपकों का विकास पूर्णतः भारतीय परिवेश में रस–भाव–क्रिया के अभिनयार्थ हुआ है।

संस्कृत साहित्य में अनेक रूपककार हुए जिन्होंने अपनी अद्भुत प्रतिभा के बल पर संस्कृत नाट्यजगत् में श्लाघनीय स्थान प्राप्त किया है। यहाँ कुछ प्रमुख रूपककार तथा उनकी कृतियों का परिचय अपेक्षित है।

भास

भास की गणना संस्कृत के प्राचीनतम रूपककार के रूप में होती है। इनके समय के विषय में विद्वानों में मतभेद है फिर भी इन्हें 300 ई0 पू0–200 ई0 पू0 के बीच रखा जा सकता है। भरत के पूर्व आविर्भाव होने के कारण इनकी रचनाओं में भरत के नाट्यशास्त्र के नियमों का पालन न होना स्वाभाविक ही है तथापि इनके रूपक अत्यधिक रोचक तथा रंगमंच की दृष्टि से सफल हैं। इनके रूपकों की भाषा सरल, सरस तथा हृदयावर्जक है। 1909 ई0 में टी0 गणपतिशास्त्री ने महाकवि भास के तेरह रूपकों का पता लगाया। इन रूपकों को चार वर्गों में रखा जा सकता है।

(i) *रामायणकथाश्रित*

(ii) *महाभारतकथाश्रित*

(iii) *उदयनकथाश्रित*

(iv) *लोककथाश्रित*

(i) ***रामायणकथाश्रित***–भास के दो रूपक–प्रतिमानाटक तथा अभिषेकनाटक रामायण की कथा पर आधारित हैं। ***प्रतिमानाटक*** सात अंक में विभक्त है जिसमें राम के राज्याभिषेक के होते–होते रुक जाने से लेकर रावण–वध तथा राम के राज्याभिषेक तक की घटनाओं का वर्णन है। ***अभिषेक नाटक*** में छह (6) अंक हैं। इसमें वालि–वध के बाद सुग्रीव के अभिषेक से लेकर राम के राज्याभिषेक तक की घटनाओं का वर्णन है।

(ii) ***महाभारतकथाश्रित***– महाभारत की कथा को आधार बना कर भास ने सर्वाधिक सात (7) रूपकों की रचना की है। ये हैं– ***ऊरुभंग, दूतवाक्य, पंचरात्र, दूतघटोत्कच, कर्णभार, मध्यमव्यायोग*** तथा ***बालचरित*** । ***ऊरुभंग*** में एक अंक ही (एकांकी) है। इसमें द्रौपदी के अपमान के प्रतिकार के रूप में भीम द्वारा दुर्योधन की जंघा तोड़ने का वर्णन है। ***दूतवाक्य*** भी एकांकी है जिसमें श्रीकृष्ण द्वारा, पाण्डवों का दूत बनकर, कौरवों के पास संदेश ले जाने की कथा है। ***पञ्चरात्र*** में तीन अंक है। इसमें दुर्योधन पाँच रात्रियों के अन्दर पाण्डवों के मिल जाने पर द्रोण को गुरुदक्षिणा के रूप में आधा राज्य देता है। ***दूतघटोत्कच*** भी एकांकी है। इसमें अभिमन्यु की मृत्यु के बाद श्रीकृष्ण

घटोत्कच को दूत बनाकर धृतराष्ट्र के पास भेजते हैं और वहाँ उसका अपमान होता है। एक अंक वाले ***कर्णभार*** में कर्ण द्वारा ब्राह्मण वेशधारी इन्द्र को कवच–कुण्डल दान – स्वरूप देने की कथा है। एकांकी ***मध्यमव्यायोग*** में मध्यम पाण्डव भीम द्वारा घटोत्कच के हाथ से एक ब्राह्मणपुत्र की रक्षा की कथा है। ***बालचरित*** पाँच अंकों का रूपक है और इसमें श्रीकृष्ण के जन्म से लेकर कंस–वध तक की कथा है। यह हरिवंशपर्व पर आश्रित है।

(iii) *उदयनकथाश्रित–* वत्सराज उदयन की कथा को आधार बनाकर भास ने दो रूपकों की रचना की – प्रतिज्ञायौगन्धरायण तथा स्वप्नवासवदत्त। चार अंकों में विभक्त ***प्रतिज्ञायौगन्धरायण*** वासवदत्ता तथा वत्सराज उदयन के प्रेम एवं वत्सराज के मंत्री यौगन्धरायण द्वारा दोनों को भगा ले जाने की कथा वर्णित है। ***स्वप्नवासवदत्त*** में छह अंक है। इसमें वासवदत्ता के जलने का मिथ्या प्रचार, उदयन–पद्मावती का विवाह आदि घटनाएँ दी गई है।

(iv) लोककथाश्रित– छह अंकों में विभाजित ***अविमारक*** में राजकुमार अविमारक एवं कुन्तिभोज की पुत्री कुरङ्गी के प्रणय एवं परिणय का वर्णन है। _***चारुदत्त*** में चार अंक है। इसमें उज्जयिनी की गणिका वसन्तसेना चारुदत्त (जात्या ब्राह्मण किन्तु कर्मणा वैश्य) की प्रणय–कथा का निरूपण है।

कालिदास

संस्कृत साहित्य के मूर्धन्य नाट्यकार कालिदास के काल के विषय में मतभेद है। कुछ विद्वान् इन्हें चतुर्थ शताब्दी ई0 का तो कुछ इन्हें प्रथम शताब्दी ई0 पू0 मानते हैं। वैसे प्रथम शताब्दी ई0 पू0 का मत अधिक मान्य है। उपमा में सिद्धहस्त *(उपमा कालिदासस्य)* प्रकृति–कवि कालिदास रचित *तीन* नाटक हैं– *मालविकाग्निमित्र, विक्रमोर्वशीय* तथा *अभिज्ञानशाकुन्तल*। *मालविकाग्निमित्र* पाँच अंकों का ऐतिहासिक नाटक है जिसमें शुंगवंशी राजा अग्निमित्र तथा विदर्भ राजकुमारी मालविका के प्रणय एवं परिणय की कथा है। राजा अग्निमित्र के अन्तःपुर में विदर्भराज की पुत्री मालविका दुर्भाग्यवश दासी बन कर रहती है। राजा उसकी सुन्दरता एवं नृत्यकला पर मुग्ध हो जाता है। प्रारम्भ में अग्निमित्र की महारानी धारिणी मालविका को दासी समझ राजा से मिलने से रोकती है किन्तु वास्तविकता जान कर अग्निमित्र और मालविका का विवाह करा देती है। *विक्रमोर्वशीय* पाँच अंकों का रूपक है जिसमें राजा पुरूरवा (विक्रम) तथा अप्सरा उर्वशी के प्रेम एवं विवाह की कथा वर्णित हैं राजा पुरूरवा और उर्वशी परस्पर प्रेमासक्त थे। उनका विवाह होता है। एक उपवन में प्रवेश करने पर कार्तिकेय के द्वारा बनाए नियमानुसार उर्वशी लता बन जाती है। पुरूरवा विलाप करता है। उर्वशी पुनः स्त्री बन जाती है। उन्हें पुत्रोत्पत्ति होती है। इन्द्र की कृपा से उर्वशी राजा के पास रह जाती है। इसमें शृंगार रस की सभी दशाओं का अत्यन्त मर्मस्पर्शी चित्रण हुआ है।

अभिज्ञानशाकुन्तल सात अंकों में विभक्त है। यह कालिदास की सर्वश्रेष्ठ कृतियों में से एक है। इसमें हस्तिनापुर के राजा दुष्यन्त तथा महर्षि कण्व के आश्रम में पली, विश्वामित्र एवं अप्सरा मेनका से उत्पन्न, शकुन्तला की कथा है। कथा इस प्रकार है– शकुन्तला–दुष्यन्त का गान्धर्व विवाह होता है। राजा अंगूठी देकर वापस चला जाता है। कण्व के आश्रम से विदा होकर शकुन्तला जब राजा के पास आती है तब अंगूठी खो जाने से, दुर्वासा ऋषि के शाप के कारण, दुष्यन्त गर्भवती शकुन्तला को नहीं पहचानता है। शकुन्तला मारीच के आश्रम में रहने लगती है। कालान्तर में अंगूठी मिल जाने से दुष्यन्त का मिलन होता है। यह शृंगाररस–प्रधान नाटक है। इसके चतुर्थ अंक के चार श्लोक बहुत प्रसिद्ध हैं।

शूद्रक

संस्कृत नाट्य जगत् में शूद्रक का महत्वपूर्ण स्थान है। इनका काल प्रायः 200 ई0 – 300ई0 के मध्य माना जाता है। इनकी रचना ***मृच्छकटिक*** है जो दस अंकों में विभाजित है। यह एक सामाजिक रूपक है। इसमें दरिद्र किन्तु गुणवान् ब्राह्मण चारुदत्त एवं गुणसम्पन्न गणिका वसन्तसेना की कथा का विस्तारपूर्वक वर्णन है। चारुदत्त के गुणों पर आसक्त वसन्तसेना मिट्टी की गाड़ी न लेने के लिए हठ करने वाले चारुदत्त के पुत्र को अपने आभूषण देती है। यह इस रूपक की प्रमुख घटना और नामकरण (मृच्छकटिक) का आधार है। राजा का साला शकार वसन्तसेना द्वारा तिरस्कृत होने पर उसका गला दबाकर आरोप

चारुदत्त पर लगाता है। किन्तु मृत्युदण्ड से ठीक पहले वसन्तसेना पहुँच कर अभियोग को मिथ्या प्रमाणित करती है, साथ ही शकार की दुष्टता भी वर्णित करती है। नायक–नायिका का मिलन होता है। शूद्रक ने सरल शैली का प्रयोग गद्य–पद्य दोनों में किया है जिससे यह रूपक आकर्षक तथा प्रभावशाली बना है। इसमें समाज के कई वर्गों का चित्रण किया गया है, साथ ही समाज के उपेक्षित वर्गों के प्रति सहानुभूति भी दिखाई गयी है। समाज की धार्मिक, आर्थिक, राजनीतिक तथा सामाजिक स्थिति के वर्णन से सम्बद्ध मृच्छकटिक एक लोकप्रिय रूपक है।

विशाखदत्त

विविध शास्त्रों के ज्ञाता विशाखदत्त संस्कृत नाट्य साहित्य के अमूल्य रत्न हैं। इनका काल चौथी –पाँचवी शताब्दी में माना जाता है। इनकी रचना ***मुद्राराक्षस*** राजनीतिक घात–प्रतिघात से युक्त ऐतिहासिक नाटक है। इसमें नाट्य–सुलभ प्रेम–कथा का परित्याग कर कूटनीति को मुख्य स्थान दिया गया है। यह घटना–प्रधान नाटक है। इसमें महान् कूटनीतिज्ञ चाणक्य द्वारा नन्दवंश के नाश के बाद चन्द्रगुप्त को राजा बनाने तथा नन्दवंश के स्वामिभक्त मंत्री राक्षस को अपने वश में करके चन्द्रगुप्त का मंत्री बनने के लिए बाध्य करने की कथा है। मुद्रा (राक्षस की अंगूठी) के द्वारा राक्षस को वश में करने का मुख्य कथानक होने से इसे मुद्राराक्षस कहते हैं।

हर्षवर्धन

स्थाण्वीश्वर (थानेसर) के राजा हर्षवर्धन एक महान् रूपककार थे। इनका राज्यकाल 606 ई० से 648 ई० माना जाता है। इनके राज्यकाल में ही चीनी यात्री ***ह्वेनसांग*** भारत आया था। इन्होंने बाणभट्ट, मयूर आदि कवियों को आश्रय दिया था। ये तीन रूपकों के रचयिता थे– ***प्रियदर्शिका, रत्नावली*** तथा ***नागानन्द***। इनमें प्रथम दो उदयनकथाश्रित नाटिकाएँ हैं, नागानन्द पाँच अंकों का नाटक है। ***प्रियदर्शिका*** चार अंकों में विभाजित है। वत्सराज उदयन और दासी के रूप में अन्तःपुर में रहने वाली शरणागता आरण्यिका (प्रियदर्शिका) परस्पर प्रेमासक्त हो जाते हैं। महारानी वासवदत्ता के मनोरंजनार्थ अभिनीत नाटक में उदयन आरण्यिका के साथ अभिनय करते हैं। इससे क्षुब्ध वासवदत्ता आरण्यिका को कारागार में डलवा देती है जहाँ वह विषपान कर लेती है। अन्ततः वासवदत्ता को ज्ञात होता है कि आरण्यिका उसकी मौसेरी बहन है, अतः उसका विष उतरवाकर उदयन से उसका विवाह करा देती है। कवि की प्रथम रचना होने के कारण यह प्रौढ़ कृति नहीं है। यद्यपि हर्षवर्धन कालिदास से प्रभावित हैं तथापि इन्होंने स्थल–स्थल पर मौलिकता का प्रयास किया है। चार अंकों की नाटिका ***रत्नावली*** में वत्सनरेश उदयन तथा सिंहल नरेश की पुत्री रत्नावली (सागरिका) के प्रेम और विवाह की कथा है। राजकुमारी रत्नावली सागरिका के छद्म नाम से उदयन के अन्तःपुर में दासी बनकर रहती है। राजा उस पर आसक्त हो जाता है। प्रारम्भ में उदयन की महारानी वासवदत्ता इसका

विरोध करती है किन्तु बाद में सागरिका को अपनी ममेरी बहन रत्नावली के रूप में पहचान कर दोनों का विवाह करा देती है। यह अपेक्षाकृत प्रौढ़तर कृति है। इनकी तीसरी रचना *नागानन्द* है जिसमें पाँच अंक हैं। यह बौद्ध धर्म की एक कथा पर आश्रित है जो 'बृहत्कथा' में संकलित थी। इसके पूर्वार्ध में जीमूतवाहन नामक विद्याधर राजकुमार और मलयवती नामक सिद्ध – राजकन्या के प्रणय एवं परिणय की कथा है। उत्तरार्ध में जीमूतवाहन द्वारा अपनी बलि देकर शंखचूड़ नामक सर्प की रक्षा गरुड़ से करने की कथा है। गौरी देवी की कृपा से नायक के पुनः जीवित हो जाने से नाटक सुखान्त बन गया। इस नाटक का प्रचार बौद्ध धर्मावलम्बियों के बीच अत्यधिक है क्योंकि इसमें बोधिसत्त्व–रूप राजा की कथा है।

भट्टनारायण

भट्टनारायण का समय सातवीं शताब्दी ई0 में माना जाता है। इन्होंने छः अंकों वाले *वेणीसंहार* नाटक की रचना की। इसकी कथा महाभारत से ली गयी है। किन्तु मूलकथा में व्यापक परिवर्त्तन कर नाटक को मौलिकता प्रदान की गयी है। विभिन्न नाटकीय तत्वों का यथास्थान रुचिर सन्निवेश और अत्यन्त दीर्घ एवं घटनाबहुल कथानक का संक्षिप्तीकरण इस नाटक की मुख्य विशेषता है । इसमें राजसभा में दुर्योधन एवं दुःशासन द्वारा द्रौपदी के अपमान से क्षुब्ध भीम अपनी प्रतिज्ञा सुनाते हैं कि वे युद्ध में दुःशासन का रक्तपान करेंगे और दुर्योधन के रक्त

से रंजित हाथों से द्रौपदी के केश (वेणी) बांधेंगे। महाभारत का युद्ध होता है और अन्त में भीम अपनी प्रतिज्ञा पूरी करते हैं। द्रौपदी की खुली वेणी का भीम द्वारा बांधा जाना मुख्य घटना होने के करण इसका नाम वेणीसंहार सार्थक है। चरित्र–चित्रण एवं रसोद्भावन की दृष्टि से यह नाटक बहुत प्रभावशाली है। साथ ही अर्थानुकूल भाषा–शैली के प्रयोग एवं वीररस प्रधान नाटक में भी रोचकता का समावेश करने के कारण संस्कृत नाट्य–जगत् में इसे उच्च स्थान प्राप्त है।

भवभूति

महाकवि भवभूति का स्थान संस्कृत रूपककारों में मूर्धन्य है। इन्होंने तीन रूपक लिखे और तीनों रूपकों में अपने को व्याकरण, मीमांसा और न्यायशास्त्र का विद्वान् (पदवाक्यप्रमाणज्ञ) कहा है । ये वेद, दर्शन, धर्मशास्त्र, काव्यशास्त्र आदि के प्रमुख विद्वान् थे। इनका आविर्भाव 680 ई0 से 750 ई0 के मध्य माना जाता है। *मालतीमाधव* इनकी अन्यतम रचना है जो *दस* अंकों में विभक्त है । इसे प्रकरण की कोटि में रखा जाता है। इसमें विदर्भराज के मन्त्रिपुत्र माधव तथा पद्मावती–नरेश के मन्त्री की पुत्री मालती के प्रेम की कथा का निरूपण है। साथ ही मकरन्द और मदयन्तिका की प्रणय कथा भी है। यह एक घटना – बहुल सामाजिक प्रकरण है जिसमें तत्कालीन समाज में प्रचलित अनेक प्रथाओं –कुप्रथाओं का वर्णन है। सात अंकों में विभक्त ***महावीरचरित*** की कथा का मूल आधार रामायण है। इसमें कुछ परिवर्तन के साथ श्रीराम के विवाह से

लेकर उनके राज्याभिषेक तक की घटनाएँ वर्णित हैं। वीररस–प्रधान यह नाटक कवि के कवित्व –प्रदर्शन पर अधिक बल देता है। *उत्तररामचरित* भवभूति की श्रेष्ठ कृति है। इसमें कवित्व और नाट्यकौशल दोनों का समुचित विकास हुआ है। यह *सात* अंकों का करुणरस – प्रधान नाटक है। इसमें राम का राज्याभिषेक , सीता का निर्वासन, पंचवटी में राम का विलाप, राम का अश्वमेध यज्ञ करना, लव–कुश का चन्द्रकेतु से युद्ध करना, राम का आगमन और राम–सीता का मिलन आदि घटनाएँ वर्णित हैं। इस नाटक के विषय में यह उक्ति प्रसिद्ध है – ***उत्तरे रामचरिते भवभूतिर्विशिष्यते।***

इसके अतिरिक्त मुरारि (अनर्घराघव), राजशेखर (बालरामायण, बालभारत, विद्धशालभञ्जिका , कर्पूरमञ्जरी– प्राकृतभाषा में लिखित सट्टक), जयदेव (प्रसन्नराघव) , कृष्णमिश्र (प्रबोधचन्द्रोदय), अम्बिकादत्त व्यास (सामवत) , मथुरा प्रसाद दीक्षित (भारतविजय) , मूलशंकर याज्ञिक (प्रतापविजय, संयोगितास्वयंवर) आदि अनेक रूपककार हुए जिनकी रचनाओं ने रूपकसाहित्य को समृद्ध किया।

अभ्यास

1. रूपक क्या है ? इसके भेदों के नाम लिखें।
2. नाट्यशास्त्र के अनुसार रूपक की उत्पत्ति स्पष्ट करें।
3. रूपकों की उत्पत्ति से संबंधित विभिन्न मतों का उल्लेख करें।

4. संस्कृत रूपकों की विशेषताएँ बताएँ।

5. भास के रूपकों का संक्षिप्त परिचय दें।

6. वेणीसंहार का परिचय दें।

7. कालिदास कौन थे ? नाटककार के रूप में समीक्षा करें।

8. भास के उदयनकथाश्रित रूपकों के नाम लिखें।

9. हर्षवर्धन का काल तथा उनके रूपकों का नाम लिखें।

10. टिप्पणी लिखें –

(क) मालविकाग्निमित्र (ख) मुद्राराक्षस (ग) उत्तररामचरित

(घ) भवभूति (ङ) भास।

11. निम्नलिखित रूपकों के रचनाकार के नाम लिखें –

(क) प्रियदर्शिका (ख) प्रतिमानाटक (ग) अभिज्ञानशाकुन्तल

(घ) प्रसन्नराघव (ङ) भारतविजय।

वस्तुनिष्ठ–प्रश्न

1. रिक्त स्थानों की पूर्ति करें : –

(i) काव्येषु .... रम्यम्।

(ii) रूपक के .... प्रकार हैं।

(iii) संस्कृत काव्य के दो भेद हैं – (i) .... (ii) ....

(iv) नाटक रूपक का एक .... है।